

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 17, शहरी विकास और चर्च

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 17 है, शहरी विकास और चर्च।

यहाँ हम शहरी विकास और चर्चों के बारे में बात कर रहे हैं।

और इसलिए, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि हमने क्या बात की थी; फिर हम शहरी परिवर्तन के दो परिणामों और फिर चर्च की प्रतिक्रियाओं पर बात करेंगे। तो हम यहाँ हैं, व्याख्यान संख्या 13। तो हम यहाँ हैं, हम यहाँ हैं।

तो, ठीक है, औद्योगिक दुनिया और शहरी दुनिया के दृष्टिकोण के साथ हमारे परिचय के संदर्भ में बस एक अनुस्मारक, बहुत सी चीजें बदल गई हैं। और यह वास्तव में नाटकीय रूप से बदल गया है। और इसलिए, औद्योगिक युग के साथ, जनसंख्या में वृद्धि हुई है।

क्षेत्रीय विस्तार में वृद्धि हुई है। आर्थिक आपूर्ति और मांग में वृद्धि हुई है। और इसलिए इसने युग को जन्म दिया है, कारखाना युग, यहाँ अमेरिका में, औद्योगिक युग और कारखाना, कारखानों का युग अपनी समस्याओं को लेकर आया है।

उन्होंने खास तौर पर तीन समस्याओं को उठाया, जिनके साथ चर्च को सामंजस्य बिठाना होगा। हम इन समस्याओं से जूझ रहे लोगों की कैसे मदद करेंगे? और समस्याएँ नंबर एक थीं: लंबे घंटे। हमारे लिए यह कल्पना करना मुश्किल है कि हम दिन में 14 या 16 घंटे, सप्ताह में सातों दिन, एक तरह की पसीने की दुकान में खड़े रहें, जहाँ गर्मियों में कोई एयर कंडीशनिंग न हो और सर्दियों में बहुत कम गर्मी हो और इसी तरह की अन्य चीजें।

1835 तक इन सब कामों के लिए मज़दूरी एक डॉलर प्रतिदिन के आसपास थी। और इसीलिए पूरे परिवार को काम करना पड़ता था। पिता, माँ, सभी बच्चों को काम पर जाना पड़ता था ताकि वे परिवार का भरण-पोषण करने के लिए पर्याप्त पैसे कमा सकें।

इसके अलावा, अत्यंत धनी और अत्यंत गरीब लोगों के बीच का विभाजन बहुत बड़ा था। और इसलिए, हमने ओवेन चैडविक की पुस्तक, द विक्टोरियन चर्च से उद्धरण दिया। और मैं बस एक मिनट के लिए आगे बढ़ने जा रहा हूँ, लेकिन यहाँ एक नाम है जो कुछ ही मिनटों में सामने आने वाला है: फिलिप ब्रूक्स।

तो, मैं इस स्लाइड पर वापस नहीं आऊंगा। तो, अगर आपको वह नाम याद है, फिलिप ब्रूक्स, तो मैं इसे फिर से लाऊंगा। तो इस बारे में चिंता मत करो।

स्लाइड्स के संदर्भ में, हमने यह दिखाने की कोशिश की कि शहर का जीवन कैसा था। मैंने एक जगह का उल्लेख किया जहाँ आपको जाना चाहिए अगर आप कभी न्यूयॉर्क में हों। यह एक अद्भुत कामकाजी संग्रहालय है, लेकिन यह लोअर ईस्ट साइड टेनेमेंट संग्रहालय है।

और अगर आप यह जानना चाहते हैं कि सदी के अंत में लोग कैसे रहते थे, तो लोअर ईस्ट साइड टेनेमेंट म्यूजियम में जाएँ। यह आपके जीवन में लोगों के जीवन जीने के तरीके के बारे में प्रकाश डालेगा। और यह स्लाइड इस बात को दर्शाती है कि बहुत से लोगों का जीवन कैसा था, फैक्ट्रियाँ कैसी थीं, करघे कैसी थे और यूनियनों कैसी थीं।

फिर, तस्वीर के दूसरी तरफ, न्यूपोर्ट हवेली हैं। और हमने बताया, याद रखें जब आप जाते हैं, मुझे पता है कि आप में से कुछ लोग न्यूपोर्ट हवेली में गए होंगे, लेकिन याद रखें जब आप वहाँ जाते हैं, तो ये केवल गर्मियों के घर थे। यह सिर्फ एक जगह थी जहाँ अमीर लोग गर्मियों में आठ सप्ताह का आनंद लेने जाते थे।

उनके पास न्यूयॉर्क और अपर स्टेट न्यूयॉर्क वगैरह में अन्य बहुत ही सुंदर घर थे। इसलिए, हवेलियाँ देखने में काफी उल्लेखनीय थीं, लेकिन मुझे याद है कि वे क्या थीं। इसलिए, केवल गर्मियों के घर।

और मेरे पास एक बहुत बड़ा स्टाफ था, जो पूरे साल उस हवेली को चालू रखने में सक्षम था। इसलिए, अमीर और गरीब के बीच का अंतर वास्तव में काफी समस्याग्रस्त था, जिस पर हम फिर से विचार करेंगे। तो, ठीक है।

मुझे लगता है कि हम यहीं तक पहुंचे हैं। तो, आइए शहरी परिवर्तन के दो परिणामों पर नज़र डालें। और फिर, तीसरा, हम चर्चों की प्रतिक्रियाओं को देखने जा रहे हैं।

चर्चों ने इस तरह की नई दुनिया के प्रति कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की? ठीक है। शहरी परिवर्तन के दो परिणाम। पहला, प्रोटेस्टेंट आबादी में परिवर्तन हुए और रोमन कैथोलिक और अप्रवासी आबादी में भी परिवर्तन हुए।

तो यह शहरी परिवर्तन का पहला परिणाम है। प्रोटेस्टेंटिज्म और रोमन कैथोलिक धर्म में परिवर्तन, साथ ही आप्रवासी आबादी, आबादी में परिवर्तन के संदर्भ में, प्रोटेस्टेंटिज्म में, चर्च से दूर जाने वाले प्रोटेस्टेंटों की संख्या लगातार बढ़ रही थी।

प्रोटेस्टेंटों की संख्या लगातार बढ़ रही थी जिनके लिए चर्च अब प्रासंगिक नहीं था, जिनके लिए चर्च अब महत्वपूर्ण नहीं था। वे या तो चर्च को नज़रअंदाज़ करते थे या कभी-कभी चर्च के प्रति विरोधी हो जाते थे। इसलिए प्रोटेस्टेंटवाद को इस पूरे शहरी परिवर्तन और इस पूरे औद्योगिकीकरण के साथ तालमेल बिठाने में मुश्किल हो रही थी, जिससे हम गुज़र रहे हैं, खास तौर पर प्रोटेस्टेंटों को चर्च के साथ अपने रिश्ते को लेकर।

उदाहरण के लिए, रोमन कैथोलिक और लूथरन चर्च जैसे अन्य अप्रवासी चर्चों को उतना मुश्किल समय नहीं झेलना पड़ा, दिलचस्प बात यह है कि रोमन कैथोलिक और अन्य अप्रवासी चर्च अपने

चर्चों से जुड़े रहे। यह उनके चर्च ही थे जहाँ उन्हें कभी-कभी शत्रुतापूर्ण वातावरण में एक पारिवारिक घर मिला। और इसलिए रोमन कैथोलिक, लूथरन या यहूदी लोगों जैसे अप्रवासी चर्चों को चर्च में एक घर मिला।

वे चर्च से जुड़े रहे। वे चर्च या आराधनालय से बंधे रहे क्योंकि कभी-कभी शत्रुतापूर्ण दुनिया में यही उनकी शरणस्थली थी। इसलिए, उन्हें अभी तक वह अनुभव नहीं हुआ जो प्रोटेस्टेंट चर्च से दूरी बनाने के मामले में अनुभव कर रहे थे।

20वीं सदी में आने पर ये समूह ऊपर की ओर गतिशीलता का अनुभव करेंगे, लेकिन अभी नहीं, सदी के अंत की तरह नहीं, शहरीकरण औद्योगीकरण के साथ नहीं जो हमारे पास है। तो यह प्रोटेस्टेंटवाद के परिणाम और रोमन कैथोलिकवाद के परिणाम के बीच इस शहरी परिवर्तन का एक परिणाम है। ठीक है।

दूसरा यह है कि शहरी परिवर्तन ने चर्च में लोगों के बीच एक बहुत गंभीर अंतर पैदा कर दिया है। चर्च शहरी आबादी के लोगों की सेवा करने में सक्षम नहीं लग रहे थे। इसलिए, चर्च में लोगों के बीच और विशेष रूप से प्रोटेस्टेंट के बीच, जो चर्च की उपेक्षा करते थे या चर्च के प्रति शत्रुतापूर्ण थे, एक बढ़ती हुई खाई थी, जैसा कि हमने प्रोटेस्टेंट के बीच उल्लेख किया है।

इसलिए, हम एक अंतर देख रहे हैं। सवाल यह है कि चर्च इसके बारे में क्या करने जा रहा है? तो ये इस शहरीकरण, इस औद्योगिकीकरण के दो तरह के परिणाम हैं जो चल रहे हैं। यह एक बड़ा बदलाव है, न केवल सांस्कृतिक रूप से बल्कि अमेरिकी ईसाई धर्म के संदर्भ में भी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

ठीक है। अब, यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात आपकी रूपरेखा में नंबर सी है। शहरी विकास के प्रति चर्च की प्रतिक्रियाएँ क्या हैं? हमने जो कुछ भी बात की है, उस पर चर्चों ने कैसी प्रतिक्रिया दी? तो, हम शहरी विकास और औद्योगीकरण के प्रति चर्च की पाँच प्रमुख प्रतिक्रियाएँ देने जा रहे हैं।

एक अर्थ में, आखिरी वाला सबसे महत्वपूर्ण हो सकता है क्योंकि आखिरी वाला अगले व्याख्यान, अगले व्याख्यान की ओर भी ले जाता है। ठीक है। लेकिन यहाँ पाँच प्रतिक्रियाएँ हैं।

नंबर एक। नंबर एक, यहाँ कई चर्च हैं, और यहाँ हम मुख्य रूप से प्रोटेस्टेंटवाद के बारे में बात कर रहे हैं। इसलिए यहाँ हम खुद को प्रोटेस्टेंटवाद तक ही सीमित रख रहे हैं।

नंबर एक, कई प्रोटेस्टेंटों के लिए, जब भी संभव हो और जितनी जल्दी हो सके शहर से एक बहुत ही नाटकीय पलायन हुआ। कई चर्चों ने फैसला किया कि वे वास्तव में शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की समस्याओं का सामना नहीं कर सकते। और इसलिए, उन्होंने फैसला किया, और ये वे चर्च थे जिनके पास पर्याप्त संसाधन थे, पर्याप्त धन था।

उन्होंने तय किया कि वे शहर छोड़कर चले जाएंगे। शहरों को छोड़ने के इस तरह के फैसले लेने वाले इस पहले समूह ने वास्तव में बढ़ते औद्योगिकीकरण और बढ़ती औद्योगिक दुनिया के साथ

अपने संबंधों के संदर्भ में दो समस्याएं पैदा कीं, जिनका वे सामना कर रहे थे। नंबर एक, वे निश्चित रूप से भौगोलिक रूप से दूरस्थ थे।

उन्होंने खुद को भौगोलिक रूप से उन समस्याओं से दूर रखा जो शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने पैदा की थीं। और दूसरी बात, उन्होंने पाया कि वे वास्तव में नैतिक रूप से शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की समस्याओं से दूर थे। वे बढ़ती नैतिक समस्याओं को स्वीकार करने में सक्षम नहीं थे जो एक भीड़ भरे आंतरिक शहर ने पैदा की थीं।

इसलिए, वे न केवल भौगोलिक दृष्टि से बल्कि नैतिक दृष्टि से भी दूर हैं, और उन्होंने अपने चर्चों को शहर के बाहर जल्द से जल्द स्थापित किया, जैसे ही उनके लिए धन उपलब्ध हुआ। अब, यह निश्चित रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 40 के दशक में उपनगरों के आविष्कार तक उच्च बिंदु पर नहीं आया। लेकिन यह पहले से ही यहाँ शुरू हो चुका है क्योंकि चर्च इससे बाहर निकल रहे हैं और नई वास्तविकता, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण द्वारा बनाए गए नए जीवन का सामना नहीं करना चाहते हैं।

तो, ठीक है, यह एक जवाब है। दूसरा जवाब कुछ चर्चों का है, और हम यहाँ मुख्य रूप से प्रोटेस्टेंटवाद के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन कुछ प्रोटेस्टेंट मण्डली शहर छोड़ने में सक्षम नहीं थीं। उनके पास वित्तीय साधन नहीं थे।

उनके पास नेतृत्व नहीं था। उनके पास शहर छोड़ने के साधन नहीं थे। इसलिए वे शहर में ही रहते हैं, लेकिन जीवित रहने के लिए संघर्ष करते हैं।

और इसमें कोई संदेह नहीं है कि जीवित रहने के इस संघर्ष ने उन्हें बहुत खराब स्थिति में डाल दिया। जीवित रहने के अपने संघर्ष में, उन्होंने अपनी खुद की छोटी सी दुनिया बनाई जो चर्च के दरवाजे के ठीक बाहर की दुनिया से बहुत दूर थी। उन्होंने अपना खुद का वातावरण बनाया, जिसका चर्च के दरवाजे के बाहर के वातावरण से कोई लेना-देना नहीं था।

और इसलिए, जीवित रहने के अपने संघर्ष में, वे अक्सर इन चर्चों में खुद को अलग-थलग पाते थे। बिना साधनों के, बिना पैसे के, और इसी तरह, बिना नेतृत्व के, वे शहरों को छोड़ने में सक्षम नहीं थे। लेकिन दूसरी ओर, वे शहरों में सेवा करने में भी सक्षम नहीं थे।

उनके पास ऐसा करने के लिए न तो साधन थे, न ही दूरदृष्टि, या फिर उनके पास ऐसा करने के लिए नेतृत्व नहीं था। इसलिए, उनके आस-पास की दुनिया के लिए वास्तव में कोई मंत्रालय नहीं था। बहुत साल पहले, शायद 45 साल पहले, मैं एक समूह के साथ था जो इन आंतरिक शहर के चर्चों में से एक में गया था।

यह देखना वाकई दुखद था क्योंकि चर्च वास्तव में बहुत संघर्षशील चर्च था। उनके पास अभी तक एक उचित पूजा स्थल बनाने के लिए भी पैसे नहीं थे। इसलिए, वे चर्च के तहखाने में बैठकर रह रहे थे, और चर्च उनके ऊपर थोड़ा सा बना हुआ था, लेकिन उनके पास इसे पूरा करने के लिए पैसे नहीं थे।

तो, हम चर्च के बेसमेंट में मिल रहे थे, और वे न्यूयॉर्क शहर के ठीक बीच में थे। और फिर भी, जब हम गए और इन लोगों से बात की, तो उन्होंने गाड़ियों को घेर लिया था। मेरा मतलब है, वे अपने चर्च के दरवाज़े के बाहर चल रही चीज़ों से अलग-थलग थे।

इसलिए, वे दो मुद्दों से जूझ रहे थे। वे अपने लिए एक उचित पूजा केंद्र बनाने में सक्षम नहीं थे। और फिर भी वे ऐसा नहीं कर पाए, और वे या तो सक्षम नहीं थे या उनके पास चर्च के दरवाज़े से परे लोगों की सेवा करने की कल्पना या रुचि नहीं थी।

इसलिए, उन्होंने अपना खुद का एक छोटा सा दुखी समाज बनाया। मेरा मतलब है, वे एक चर्च के तहखाने में रहते थे, कभी नहीं सोचते थे कि अगर वे अपने आस-पास के लोगों की सेवा करेंगे तो चर्च जीवंत हो सकता है। लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाए।

और यही इस दूसरे समूह की विशेषता है। यही इस दूसरे समूह की विशेषता है। शहर में रहते हैं, लेकिन कोई साधन नहीं, कोई कल्पना नहीं, कोई रचनात्मकता नहीं, नहीं, शायद बाहर जाने में कोई दिलचस्पी नहीं, चर्च की सीमाओं को अपने आस-पास के इलाकों तक ले जाने में कोई दिलचस्पी नहीं।

बहुत दुखद स्थिति थी। लेकिन यह बहुत से प्रोटेस्टेंट चर्चों के लिए सच था। वे खुद को यहीं पाते हैं।

ठीक है, नंबर तीन, शहरीकरण के लिए तीसरी प्रतिक्रिया औद्योगीकरण है। बहुत सारे प्रोटेस्टेंट चर्च शहर में बने रहे, लेकिन वे बहुत साधन संपन्न चर्च थे। वे धनवान चर्च थे।

उनके पास धन था, उनके पास शक्ति थी, और शहर में उनका प्रभाव था। और इसलिए, वे मुख्य रूप से उपदेशक के इर्द-गिर्द काम करते थे क्योंकि कभी-कभी उपदेशक का व्यक्तित्व बहुत ही करिश्माई होता था, वह बहुत, बहुत, बहुत महान उपदेशक होता था। और उन्होंने जो चर्च बनाए वे बहुत ही शानदार चर्च थे, लेकिन शहर के भीतर ही।

तो, हम अपनी दूसरी फील्ड ट्रिप पर उन चर्चों में से एक को देखने जा रहे हैं। और यह फिलिप्स ब्रूक्स का चर्च है। तो, याद रखें कि मैंने पिछली स्लाइड में उनका नाम लिखा था, फिलिप्स ब्रूक्स।

और हम बोस्टन में ट्रिनिटी एपिस्कोपल चर्च देखने जा रहे हैं। फिलिप्स ब्रूक्स ने उस चर्च का निर्माण किया था। और यह बोस्टन में कोप्ले प्लेस में एक शानदार चर्च है।

तो, वहाँ कई तरह के शानदार चर्च बनाए गए। मैं अभी न्यूयॉर्क में था और मुझे बोर्ड मीटिंग के लिए न्यूयॉर्क जाना था। जब आप न्यूयॉर्क शहर में जाएँगे, तो आपको 125वीं स्ट्रीट पर शानदार रिवरसाइड चर्च दिखाई देगा।

खैर, यह रॉकफेलर्स द्वारा बनाया गया था। यह एक विशाल चर्च है। और एक बहुत प्रसिद्ध उपदेशक आया और लंबे समय तक उस चर्च में उपदेश देता रहा।

लेकिन यह न्यूयॉर्क के क्षितिज पर है, न्यूयॉर्क के ऊपरी, ऊपरी पश्चिमी हिस्से में, आप रिवरसाइड चर्च देखते हैं। यह एक, यह एक, यह एक विशाल सुविधा है। इसलिए, इनमें से कुछ प्रोटेस्टेंट चर्च बने रहे, लेकिन उनके पास साधन, नेतृत्व और प्रचारक थे जो जबरदस्त संरचनाओं का निर्माण करने में सक्षम थे।

ये चर्च धनी लोगों, प्रभावशाली लोगों, जिन्हें हम दूसरे व्याख्यान में धर्म के सुसंस्कृत तिरस्कारकर्ता कहेंगे, को आकर्षित करते थे। समुदाय में बुद्धि वाले लोग, साधन संपन्न लोग, और शक्तिशाली लोग धर्म के तिरस्कारकर्ता थे। और ये चर्च उन्हें आकर्षित करते थे।

इन चर्चों में ऊंचे और बाहर के लोगों के लिए मंत्रालय था। इसमें उन लोगों के लिए मंत्रालय था जो संस्कृति और समाज में धनी, प्रभावशाली और शक्तिशाली थे। तो यह एक अच्छी बात है।

मेरा मतलब है, किसी को ऊपर और बाहर की सेवा करनी होगी, आप जानते हैं। हम इस बारे में तब बात करेंगे जब हम फ्रेडरिक श्लेयरमाकर के बारे में बात करेंगे क्योंकि यही उनका मंत्रालय था। अब आपको उनके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन यही उनका मंत्रालय था।

तो यह इन चर्चों के बारे में सच था। वे वास्तव में बहुत अमीर, प्रभावशाली, शक्तिशाली ग्राहकों की सेवा करते थे। इन चर्चों के साथ समस्या ज़रूरी नहीं कि फिलिप्स ब्रूक्स के साथ थी, हालांकि मुझे लगता है कि ऐसे समय भी थे जब वह इस प्रलोभन के आगे झुक गए थे, लेकिन इन चर्चों के साथ समस्या यह थी कि उन्होंने बाइबिल के संदेश को अमीर, प्रभावशाली, शक्तिशाली लोगों के लिए समायोजित किया।

और वहाँ एक तरह की सहूलियत थी, बाइबिल के संदेश को कमजोर करना। और इन लोगों को आकर्षित करने के लिए, लेकिन साथ ही उन्हें बनाए रखने के लिए, शायद कभी-कभी चर्चों में इन लोगों का समर्थन बनाए रखने के लिए, यह समस्याग्रस्त हो जाता है। हम तेरा राज्य आए नामक एक वीडियो दिखाने जा रहे हैं।

और हम एक खास चर्च को दिखाने जा रहे हैं। और मैं, आप, यह इतना स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि चर्च में उन्होंने बाइबिल के संदेश, बाइबिल के संदेश को समायोजित किया है ताकि उनकी मंडली खुश रहे। इसलिए, संदेश का समायोजन यीशु के बारे में बात करना है लेकिन पाप के बारे में बात नहीं करना है।

न्याय के बारे में बात मत करो। नरक के बारे में बात मत करो। यीशु को क्या आपत्तिजनक लगा, इस बारे में बात मत करो, और इस तरह की चीजों के बारे में बात मत करो।

अपना संदेश बहुत सरल रखें। और यीशु एक अच्छे इंसान हैं और आपको यीशु का अनुसरण करना चाहिए, आप जानते हैं। इसलिए, यह प्रलोभन था।

जैसा कि मैंने कहा, हम यहाँ यह देखने जा रहे हैं। मुझे कहना होगा कि फिलिप्स ब्रूक्स के साथ ऐसा कुछ नहीं है। लेकिन, लेकिन हो सकता है कि फिलिप्स ब्रूक्स के साथ कुछ समय रहा हो, लेकिन उनके साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ।

तो, हम देखेंगे। तो यह नंबर तीन है: बड़े चर्च शहरों में रहने वाले अमीर लोगों को आकर्षित करते हैं। उनके पास वहाँ रहने के लिए साधन और नेतृत्व है।

तो, ठीक है, नंबर चार, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के लिए चौथी प्रतिक्रिया। चौथी प्रतिक्रिया यह अहसास है कि शहरों में लोगों तक पहुँचने के लिए नई रणनीतियाँ, नए संगठन और नए साधन होने चाहिए। अगर यह उसी पुराने तरीके से किया जाता है तो वे सुसमाचार का जवाब नहीं देंगे।

और इसलिए ऐसे समूह थे जिन्होंने शहरों के भीतर लोगों तक पहुँचने के लिए नए तरीकों से रणनीति बनाई। इसलिए, मैं इनमें से चार समूहों का उल्लेख करने जा रहा हूँ जो आंतरिक शहरों और आंतरिक-शहर संस्कृति में लोगों की सेवा करने में बहुत रणनीतिक थे जो औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और इसी तरह की अन्य समस्याओं से पीड़ित थे। ठीक है।

नंबर एक, एक समूह है, और मेरे पास यह पावरपॉइंट पर नहीं है, लेकिन इसे अमेरिकन संडे स्कूल यूनियन कहा जाता था। अमेरिकन संडे स्कूल यूनियन की स्थापना 1824 में हुई थी। अब, उस समय स्थापित अमेरिकन संडे स्कूल यूनियन, इस धारणा को एक साथ लाने, संडे स्कूल के महत्व और लोगों की शिक्षा के लिए संडे स्कूलों को एक साथ लाने, लोगों को पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए एक तरह से था ताकि वे शास्त्रों को पढ़ सकें।

इसलिए, अमेरिकन संडे स्कूल यूनियन ने वास्तव में नए लोगों तक पहुँच बनाई। वे शहरों में रहने वाले लोगों तक पहुँचे, वे उन लोगों तक पहुँचे जो शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण पीड़ित थे, और वे उन्हें शिक्षित करने में मदद कर रहे थे, लेकिन वे उन्हें बाइबल के ज्ञान में शिक्षित करने में भी मदद कर रहे थे। अमेरिकन संडे स्कूल यूनियन चर्च के लिए बहुत साक्षर लोगों को तैयार करने में बहुत सफल रही क्योंकि ये लोग जिन तक पहुँचे, जिन बच्चों तक वे पहुँचे और उन्हें शिक्षित किया और उन्हें पढ़ना सिखाया और वे बाइबल पढ़ सकते हैं और बाइबल को समझ सकते हैं, ये लोग चर्चों में पले-बढ़े।

चूँकि वे चर्च में पले-बढ़े थे, इसलिए उन्हें बाइबल का बहुत अच्छा ज्ञान था। और इसलिए, अमेरिकन संडे स्कूल यूनियन ने वास्तव में रुआ में चर्च के काम और चर्च की सेवकाई को मज़बूत किया। लेकिन आप देखिए, यह एक नई बात थी।

यह लोगों तक पहुंचना है। यह उन लोगों तक पहुंचना है जहां वे हैं, उनकी जरूरतों को पूरा करना है, जो इस मामले में उनकी शैक्षिक जरूरतों को पूरा करना था, और फिर उन्हें चर्च के जीवन से जोड़ना था। इसलिए, अमेरिकन संडे स्कूल यूनियन के पास उनके लिए एक नई रणनीति थी।

हम पहले ही दूसरे समूह का उल्लेख कर चुके हैं, लेकिन दूसरा समूह YMCA था। हमने ड्वाइट एल. मूडी के संबंध में YMCA का विशेष रूप से उल्लेख किया क्योंकि वह शिकागो में YMCA के अध्यक्ष थे। हमने यह पहले भी कहा है, लेकिन YMCA की स्थापना एक इंजील आंदोलन के रूप में की गई थी, जिसका उद्देश्य शुरू में शहरों में काम करने वाले युवा पुरुषों तक पहुंचना था और

न केवल उन्हें शैक्षिक रूप से मदद करना था, न केवल उन्हें सामाजिक रूप से मदद करना था, न केवल उन्हें शारीरिक रूप से मदद करना था, बल्कि उन्हें आध्यात्मिक रूप से भी सेवा प्रदान करना था।

तो, YMCA एक आध्यात्मिक आंदोलन था जो पूरे व्यक्ति की सेवा करता था। और यह बहुत सफल रहा। अब, अमेरिका में, हम पहले ही कह चुके हैं कि अमेरिका, शायद दुनिया के अन्य स्थानों में, अपने आरंभिक मिशन पर कायम रहा है।

लेकिन अमेरिका में, वास्तव में, उन्होंने अपना नाम बदलकर वाई रख लिया है। इसलिए यह पूरी तरह से कायम नहीं रहा। लेकिन निश्चित रूप से, यह एक नया रणनीतिक इंजील आंदोलन था जो शहरी केंद्रों में पुरुषों तक पहुंचा। नंबर तीन, मैं यहाँ साल्वेशन आर्मी का जिक्र जल्दी से करूँगा।

लेकिन साल्वेशन आर्मी की स्थापना 1865 में इंग्लैंड में हुई थी। इसलिए इसकी स्थापना अमेरिका में नहीं हुई थी। यह आधिकारिक तौर पर 1880 में अमेरिका आई थी।

लेकिन साल्वेशन आर्मी एक मंत्रालय था, और मुख्य रूप से आज भी है, लेकिन यह आंतरिक शहरों में रहने वाले लोगों के लिए मंत्रालय था, उन लोगों के लिए जो शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, और इसी तरह के दौर से गुजर रहे थे। तो यह मेरा तीसरा समूह होगा, साल्वेशन आर्मी। उन्होंने आंतरिक शहरों में लोगों के साथ घूमकर, उनके साथ रहकर, और न केवल शारीरिक बल्कि आध्यात्मिक जीवन के समग्र मंत्रालय के हिस्से के रूप में उनकी सेवा की।

साल्वेशन आर्मी का दर्शन था और अब भी है, लेकिन दर्शन यह है कि यदि आप लोगों की सामाजिक रूप से सेवा करते हैं या स्वास्थ्य या शारीरिक आवश्यकताओं के संदर्भ में लोगों की सेवा करते हैं, तो आप उन्हें तब तक व्यक्ति के रूप में नहीं पहचानते जब तक कि आप आध्यात्मिक रूप से भी उनकी सेवा नहीं करते। यह केवल तभी है जब आप आध्यात्मिक रूप से और साथ ही भौतिक रूप से उनकी सेवा करते हैं, तभी आप उनकी समग्रता, उनके व्यक्तित्व को पहचानते हैं। इसलिए, केवल शारीरिक रूप से उनकी सेवा करना और आध्यात्मिक रूप से उनकी सेवा न करना उन्हें व्यक्ति के रूप में पहचानना नहीं है।

और यह शहरों में जाना और शहरों में काम करना और शहरों में सेवा करना था, यह साल्वेशन आर्मी की पूरी प्रारंभिक सेवा थी। तो यह नंबर तीन है। नंबर चार हम पहले ही देख चुके हैं, और नंबर चार गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद होगा जो फिनी के शहरों में आने के माध्यम से आया, मूडी के शहरों में आने के माध्यम से, वह गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद।

और हमने बुलाया है, मुझे याद है कि इसे क्या कहा जाता था, यह शहर में आने वाली कैंप मीटिंग है। और यह बहुत दिलचस्प है कि फिने और मूडी दोनों के लिए, शायद मूडी की तुलना में फिने के लिए थोड़ा ज़्यादा, लेकिन फिने और मूडी दोनों के लिए, वे वास्तव में नहीं जानते थे कि शहर में उनके मंत्रालय को कैसे लिया जाएगा। वे नहीं जानते थे कि शहर के लोग वास्तव में उनके मंत्रालय, उनके पुनरुत्थानवादी मंत्रालय से आकर्षित होने जा रहे हैं या नहीं।

इसलिए, वे थोड़े डर और घबराहट के साथ शहरों में गए क्योंकि क्या होने वाला था? क्या लोग हमारी बैठकों और अन्य चीज़ों में आएंगे? और फ़िनी और मूडी ने पाया कि शहरी सेटिंग में उनके पुनरुत्थानवाद के लिए जबरदस्त प्रतिक्रिया थी। वे यह देखकर हैरान थे कि उनके मंत्रालय के लिए कितनी शानदार प्रतिक्रिया थी। और यह तब भी सच था जब वे इंग्लैंड गए थे।

जब वे इंग्लैंड गए, तो वे थोड़े चिंतित थे, क्या लोग हमारी बात सुनेंगे? क्या हमें भीड़ मिलेगी? और, ज़ाहिर है, भीड़ बहुत ज़्यादा थी। यह बहुत दिलचस्प है कि बिली ग्राहम को भी अपने शुरुआती मंत्रालय में यही चिंता थी। वह कैरोलिनास का लड़का था।

उन्हें नहीं पता था कि उनका पुनरुत्थानवाद शहरों में चलेगा या नहीं। और खास तौर पर, यह बहुत दिलचस्प है। जब हम इंजीलवाद, कट्टरवाद और इंजीलवाद के बारे में बात करेंगे तो हम ग्राहम के बारे में थोड़ा और बात करेंगे।

लेकिन यह बहुत दिलचस्प है, इंग्लैंड की अपनी पहली यात्रा में, उन्होंने वैसा ही महसूस किया जैसा फ़िनी और मूडी ने इंग्लैंड की यात्रा के दौरान किया था। क्या लोग मेरा स्वागत करेंगे? मुझे यकीन नहीं है। इंग्लैंड में थोड़ा विरोध है।

बिली ग्राहम इंग्लैंड गए, और उनकी पुनरुत्थान संख्या और अन्य बातों के मामले में बहुत सफल रही। तो, गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद। ठीक है, अब एक लेखक शहरों में गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद को देखता है और कहता है कि इसका एक कारण, ठीक है, यह आध्यात्मिक कारणों से सफल रहा।

लोग प्रभु के पास आए; लोग चर्चों में वापस आए। हालाँकि, गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद की सफलता के लिए तीन सांस्कृतिक कारण थे। तो, आइए पहले उन तीन सांस्कृतिक बाधाओं का उल्लेख करें और फिर शहरी दुनिया में सेवा करने के इस चौथे तरीके की सफलता के कारणों का उल्लेख करें।

तो, तीन बातें। पहली बात, गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद ने इन अमेरिकी शहरों में पनपी गुमनामी को भेद दिया। लोग, इस तथ्य के बावजूद कि वे शायद न्यूयॉर्क या फिलाडेल्फिया या बोस्टन में रहते थे, उनके आस-पास सैकड़ों हज़ार या लाखों लोग थे, लोग बहुत, बहुत, बहुत अकेले थे।

वे खुद को बहुत अलग-थलग और गुमनाम महसूस करते थे। गुमनामी उनके अकेलेपन में उनके लिए जानलेवा थी। पुनरुत्थानवादी बैठकों में उन्हें पता चला कि वे वास्तव में अकेले नहीं थे।

वे अन्य लोगों के साथ एकत्र हुए। उन्हें अन्य लोगों द्वारा परामर्श दिया गया। वे अन्य लोगों के साथ चर्च में वापस आ गए।

और इसलिए, उन्हें एक ऐसा समुदाय मिला जिसकी उन्हें कमी खल रही थी, जिसे वे शहर में रहने और काम करने के कारण खो चुके थे। इसलिए, गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद ने गुमनामी और अकेलेपन, एक तरह से अकेली भीड़ को भेद दिया। इसलिए, यह उस तरह से बहुत सफल रहा।

तो यह एक बात है। दूसरी बात, जो लोग शहर में रहते थे, उनका जीवन बहुत ही नीरस था। वे कारखाने में जाकर दिन में 14 घंटे काम करते थे, कभी-कभी हफ्ते में सातों दिन, करघे पर खड़े होकर या सिलाई मशीन पर बैठकर।

आप सिर्फ़ यही करते थे, दिन में 14 घंटे, हफ्ते में सात दिन। इसमें एक नीरसता थी जो बस नीरस थी। पुनरुत्थान ने जो किया वह यह था कि पुनरुत्थान ने उन्हें एक ऐसा उत्साह दिया जो उनके रोज़मर्रा के जीवन में नहीं था।

तो, यह इस तरह की सांस्कृतिक उपलब्धि थी कि पुनरुत्थान ने शहरी जीवन की एकरसता को तोड़ दिया। पुनरुत्थानवादी बैठकों में उत्साह था, और प्रचारक उत्साहित थे, और लोगों को मसीह में आनंद लेने के लिए जो जीवन उन्होंने पेश किया वह रोमांचक था। और इसलिए यह नंबर दो है, सांस्कृतिक तरह की चीज़ जो गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद ने हासिल की, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं।

ठीक है, नंबर तीन। तीसरी चीज़ जो गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद ने हासिल की, वह थिएटर का विकल्प था। अब आप इसे हमारी संस्कृति में पाएंगे, हमारे समय में, आपको यह थोड़ा अजीब लगेगा।

थिएटर का विकल्प। अब, याद कीजिए कि जब हम यहाँ थिएटर के बारे में बात कर रहे हैं, 19वीं सदी में, सदी के मोड़ पर, हम लाइव थिएटर के बारे में बात कर रहे हैं। हम फ़िल्म देखने जाने की बात नहीं कर रहे हैं।

हम लाइव थिएटर के बारे में बात कर रहे हैं। कई लोगों के लिए, खास तौर पर वे जो चर्च में पले-बढ़े हैं और जिनमें किसी तरह की चेतना है, थिएटर उनके लिए वर्जित था। थिएटर पाप का स्थान था।

थिएटर एक ईश्वरविहीन जगह थी। और इसलिए, संगीत और नाटक और कॉमेडी वगैरह वास्तव में बुतपरस्त, ईश्वरविहीन थे, और लोग थिएटर में नहीं जाते थे। यह दिलचस्प है कि गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद ने शहरों में लोगों के लिए जो किया वह थिएटर के लिए एक विकल्प बनाना था।

जब वे पुनरुत्थान सभा में गए, तो उन्होंने संगीत और गायन सुना, और कभी-कभी कुछ नृत्य भी हो सकता था। इसलिए, गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद ने थिएटर की जगह ले ली, लेकिन मनोरंजन के एक स्वस्थ स्थान के रूप में और मनोरंजन के एक प्रकार के बुतपरस्त स्थान के रूप में नहीं। इसलिए, गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद, उस तरह के पेशेवर पुनरुत्थानवाद ने इन तीन प्रकार की सांस्कृतिक चीज़ों को पूरा किया।

हम उनकी सफलता में गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद और आध्यात्मिक दृष्टि से भी देखेंगे, लेकिन तीन सांस्कृतिक चीज़ें थीं जो वास्तव में इन तीन नाटकीय तरीकों से संस्कृति में प्रवेश

करती थीं। तो यह नंबर चार है। यह शहरी विकास और इसी तरह की अन्य चीजों से निपटने का चौथा तरीका है।

नंबर पांच धार्मिक है। तो, मैं बस एक मिनट के लिए यहीं रुकूंगा, लेकिन क्या नंबर चार के बारे में कोई सवाल है? चार प्रमुख तरीके। हम एक मिनट में पांचवें के बारे में बात करने जा रहे हैं।

शहरी संस्कृति, औद्योगिकीकरण और नई दुनिया से जुड़ने के चार प्रमुख तरीकों के बारे में कोई सवाल? हाँ। तो जाहिर है, लोग सप्ताह में छह दिन काम करते थे। कभी-कभी सात दिन।

तो, वे आम तौर पर कब मीटिंग करते थे? ठीक है। इसीलिए फ़िनी के लिए नए उपायों में से एक यह था कि वे उस समय पर रिवाइवल मीटिंग करें जब वे जा सकें, और वह दोपहर का समय होगा यदि वे आधे घंटे के लंच ब्रेक पर या 45 मिनट के लंच ब्रेक पर बाहर हों या यह खिंचाव वाला हो, या शाम की मीटिंग। यह शायद नौ या 10 बजे शुरू होती थी, वे शाम को जा सकते थे।

अब, 1835 के बाद, छह दिन के कार्य सप्ताह और वेतन में वृद्धि आदि के बारे में काफी कानून पारित किए गए। इसलिए, लोगों के पास रविवार था। जब हम फ़िनी और मूडी में जाते हैं, तो लोगों के पास पुनरुत्थानवादियों को सुनने के लिए रविवार होता है।

इसलिए, वे लंच ब्रेक के दौरान जा सकते हैं, वे शाम को जा सकते हैं, पूरे दिन काम करने के बाद देर शाम को जा सकते हैं, जो करना आसान नहीं था, और वे रविवार को भी जा सकते हैं। इसलिए, उनके पास तीन तरह के अवसर थे। लेकिन यही कारण है कि फ़िनी ने अपने नए उपाय विकसित किए।

तो, हम सिर्फ रविवार को ही पूजा नहीं करेंगे। यह पुराना तरीका है। हम दोपहर में पूजा करेंगे, और शाम को भी पूजा करेंगे।

इसलिए उन्होंने उन लोगों के लिए अवसर पैदा करने के लिए ये नए कदम उठाए। तीसरा, या सिर्फ तीन, सिर्फ वे तीन। फिर, हमने चार मुख्य तरीके बताए हैं जिनसे चर्च ने शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, इत्यादि पर प्रतिक्रिया दी है।

अब, हम पाँचवाँ मुख्य तरीका बताने जा रहे हैं जिससे यह प्रतिक्रिया करता है। और मैंने इसे पाँचवें तक बचा लिया क्योंकि यह अगले व्याख्यान की ओर ले जाता है। लेकिन ऐसा करने से पहले, क्योंकि पाँचवाँ धार्मिक है, लेकिन ऐसा करने से पहले, क्या इन पहले चार तरीकों के बारे में कोई सवाल है जिसमें चर्चों, विशेष रूप से प्रोटेस्टेंट चर्चों ने एक नई वास्तविकता पर प्रतिक्रिया दी, वास्तव में? हमने मानवता के इतिहास में इस तरह का जीवन कभी नहीं देखा है।

याद कीजिए, हमने कहा था कि न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क का लोअर ईस्ट साइड, उस समय पूरी दुनिया में सबसे घनी आबादी वाला स्थान था? तो, हम यहाँ एक नई वास्तविकता में हैं, और वास्तव में एक कठिन वास्तविकता, इसमें कोई संदेह नहीं है। आपने साल्वेशन आर्मी का उल्लेख किया।

हाँ। उन्होंने अपना खुद का समुदाय नहीं बनाया, लेकिन वे एक ही इमारत में रहने लगे; उन्होंने अपार्टमेंट साझा किए, और उन्होंने श्रम साझा किया। और फिर उन्होंने क्या किया, और जब हम इंजीलवाद के बारे में बात करेंगे तो हम इसके बारे में थोड़ा और बात करेंगे, लेकिन उन्होंने ऐसे कार्यक्रम भी बनाए जिससे कारखानों में काम करने वाले लोगों के लिए अपना काम करना आसान हो गया।

इसलिए, उदाहरण के लिए, उन्होंने डेकेयर सेंटर बनाए, जहाँ आपके घर में एक जगह होगी जहाँ हम आपके बच्चों की देखभाल करेंगे जबकि आप फैक्ट्री जाते हैं। हम जानते हैं कि आपको अभी भी फैक्ट्री जाना है, लेकिन अपने बच्चों को अपने साथ ले जाने के बजाय, हम आपकी देखभाल करेंगे। तो कभी-कभी यह परिवार होता था।

ज़्यादातर वास्तविक झुगियों के संदर्भ में। मेरा मतलब है कि झुगियों में बहुत कठिन काम होता है। यह काम ज़्यादातर अकेले लोग करते थे।

लेकिन कभी-कभी, परिवारों को ऐसा करने के लिए बुलाया जाता है, इसलिए उन्हें लगता है कि यह उनका मंत्रालय है। लेकिन वे बनाने में सक्षम थे, और एक बड़ा, यह हमें थोड़ा मूर्खतापूर्ण लगता है, मुझे लगता है, लेकिन जब माँ और पिता काम पर जाते हैं और हम बच्चों को नीचे रखते हैं, और एक छोटे से डेकेयर सेंटर में, हम उनके लिए उनके घरों की सफाई भी कर सकते हैं। हम उनके लिए अपार्टमेंट में ताज़ा पानी ला सकते हैं।

हम उनके लिए खरीदारी कर सकते हैं और उनके लिए कुछ खाना ला सकते हैं। दूसरे शब्दों में, उनके जीवन को थोड़ा और आसान बनाने के लिए। लेकिन समुदाय निश्चित रूप से उन शर्तों के साथ बनाए गए थे जिन्हें हम हमेशा आमंत्रित करते थे; सेना हमेशा लोगों को रविवार को अपने स्थानीय चर्चों में पूजा करने के लिए आमंत्रित करती थी, और इसी तरह।

इसलिए, वहाँ एक पूर्ण सामुदायिक समझ थी। लेकिन ऐसे समय में जब बहुत सारे चर्च शहरों को छोड़कर चले गए और लोगों को उनके हाल पर छोड़ दिया, शायद यह अच्छा था। इसलिए, अमेरिकन संडे स्कूल यूनियन भी बहुत सफल रही।

वाईएमसीए बहुत सफल रहा। सेना, और फिर हमने गैर-सांप्रदायिक पुनरुत्थानवाद का उल्लेख किया। इन चार तरीकों के बारे में यहाँ कुछ और भी है।

ठीक है, चलो पाँचवें भाग पर चलते हैं। मैं तुम्हें पाँच सेकंड देता हूँ, और हम पाँचवें भाग पर चले जाएँगे। और फिर हम अगले भाग पर चले जाएँगे।

एक, दो, तीन, चार, पाँच। ठीक है, इससे सब ठीक हो जाएगा। स्ट्रेचिंग।

मुझे तुम्हारे लिए बहुत बुरा नहीं लगता क्योंकि बुधवार और शुक्रवार को जब मैं न्यूयॉर्क में होता हूँ तो तुम क्या कर रहे होते हो? तुम लिख रहे होते हो। तुम आराम नहीं कर रहे होते हो। तुम आराम नहीं कर रहे होते हो, है न? बुधवार और शुक्रवार को इस समय के दौरान तुम क्या लिख रहे होते हो? अपने पेपर।

आप अपने पेपर लिख रहे हैं - पहला ड्राफ्ट। तो, आप उन्हें मुझे दे सकते हैं ताकि मैं आपकी मदद कर सकूँ।

आप यही कर रहे हैं। आप परीक्षा की तैयारी भी कर सकते हैं। तो, कुछ बातें हो सकती हैं।

ठीक है, मैं आपके बारे में सोचूंगा। ठीक है, नंबर पांच। शहरी विकास के प्रति चर्चों की पांचवीं प्रतिक्रिया क्या है? नंबर पांच।

पाँचवाँ जवाब सुसमाचार की एक मौलिक पुनः-समझ है। पाँचवाँ जवाब एक धार्मिक जवाब है। मौलिक रूप से, मैंने सुसमाचार को पूरी तरह से पुनः-समझ लिया।

एक नया धर्मशास्त्र विकसित करना। एक ऐसा धर्मशास्त्र विकसित करना जो सुसमाचार के लिए शहरी जीवन से सीधे तौर पर मिल सके। तो यह पाँचवाँ जवाब है।

सुसमाचार की एक क्रांतिकारी पुनर्व्याख्या। एक नया धर्मशास्त्र। अब, कभी-कभी, उस नए धर्मशास्त्र को एक नाम से जाना जाता है, और इसे सामाजिक सुसमाचार कहा जाता है।

अभी, हम अभी नहीं जानते; हम अगले कुछ व्याख्यानों में सामाजिक सुसमाचार के बारे में बात नहीं करने जा रहे हैं। लेकिन बस इसे ध्यान में रखें। लेकिन दूसरी बात, अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो दूसरी बात जो आप कर रहे हैं, वह है कि आप रौशनबुश की जीवनी पढ़ रहे हैं।

वास्तव में, आपने पहले ही शुरू कर दिया है। और आप सप्ताह में एक अध्याय कर रहे हैं। क्या आप रौशनबुश की जीवनी पर सप्ताह में एक अध्याय नहीं कर रहे हैं? और आप इसे अंतिम परीक्षा से एक रात पहले तक नहीं छोड़ रहे हैं, है न? भगवान आपका भला करे, नहीं।

तो, आप रौशनबुश की जीवनी पढ़ रहे हैं। वह सामाजिक सुसमाचार आंदोलन के जनक थे। तो, हम इसे देखेंगे।

ठीक है, तो यह व्याख्यान संख्या 13 है, चर्चों में शहरी विकास। ठीक है, व्याख्यान संख्या 14। अब, अपने पाठ्यक्रम में ध्यान दें कि हम अब पाठ्यक्रम के संदर्भ में एक नए तरह के समय में आगे बढ़ रहे हैं।

यह पाठ्यक्रम का चौथा भाग है, आधुनिक अमेरिका, 1918 से वर्तमान तक। तो, अब हम एक नए समय-सीमा में प्रवेश कर रहे हैं। और इस नए समय-सीमा में पहली बात व्याख्यान संख्या 14 है, अमेरिका में उदार धर्मशास्त्र।

मैं जो करने जा रहा हूँ वह एक परिचय देना है। शायद आज मेरे पास इतना ही समय है। तो, चलिए परिचय देते हैं।

तो ठीक है, अमेरिकी जीवन में, गृह युद्ध से लेकर प्रथम विश्व युद्ध के अंत तक, और गृह युद्ध से लेकर प्रथम विश्व युद्ध के समय तक, अमेरिकी सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में बहुत बड़े बदलाव हुए। और हम उनमें से बहुत से बदलाव पहले ही देख चुके हैं। तो, लेकिन उन बदलावों में वे लोग भी थे जो भविष्य को लेकर बहुत आश्वस्त थे।

गृहयुद्ध के बाद और प्रथम विश्व युद्ध, 1914 से पहले, भविष्य के बारे में बहुत आश्वस्त, भविष्य के लिए बहुत कल्पनाशील, बहुत, चलो देखते हैं कि क्या मेरे पास यहाँ एक और शब्द है, भविष्य के संदर्भ में बहुत प्रगतिशील। इसलिए, ऐसे लोग थे जो वास्तव में महसूस करते थे कि भविष्य एक अच्छा और आशाजनक भविष्य होने वाला था। अब, समाज में धार्मिक रूप से बहुत सारे बदलाव हुए हैं जिन्हें हम पहले ही देख चुके हैं।

लेकिन कुछ बदलाव धार्मिक रूप से भी हुए। तो, मैं धार्मिक रूप से हुए प्रमुख बदलाव का जिक्र करना चाहूँगा। और वह था अधिकार की प्रकृति में बदलाव।

अधिकार की प्रकृति में परिवर्तन। यहाँ अधिकार ही मुख्य शब्द है। और हम मूल रूप से प्रोटेस्टेंट चर्चों के भीतर की बात कर रहे हैं।

ठीक है, तो पूर्ण अधिकार। प्रोटेस्टेंटवाद के लिए पूर्ण अधिकार मूल रूप से धर्मग्रंथों पर था और धर्मग्रंथों पर जो मसीह में परमेश्वर को हमारे सामने प्रकट करते थे। यह प्रोटेस्टेंटवाद के लिए अधिकार का आधार था।

इसलिए, प्रोटेस्टेंट धर्मग्रंथों पर, बाइबल पर और बाइबल के मुख्य संदेश पर खड़ा है, जो यह है कि परमेश्वर हमें मसीह में छुड़ाने के लिए आया है, और पवित्र आत्मा हमें उस महान वास्तविकता के बारे में बताता है। यह प्रोटेस्टेंट चर्चों का महान अधिकार रहा है। यह बदलना शुरू हो रहा है।

उस अधिकार के लिए एक बड़ी चुनौती सामने आ रही है। और अधिकार के लिए बड़ी चुनौती, उस अधिकार के लिए, एक अर्थ में, और मैं सिर्फ इतना ही नहीं कह रहा हूँ, बल्कि एक अर्थ में, यह डार्विनवाद से शुरू होती है। यह विज्ञान के मूल्य से शुरू होती है।

और इसकी शुरुआत धर्मग्रंथों के अधिकार पर सामाजिक परिवर्तन के मूल्य से होती है। इसलिए, इस तरह की चुनौतियाँ चर्च में आती हैं। डार्विनवाद ऊपर से निर्माण के बजाय नीचे से निर्माण है।

धर्मशास्त्रों के प्रति बौद्धिक चुनौतियों और सामाजिक परिवर्तनों से धर्मशास्त्रों के अधिकार को चुनौती मिलती है। इसलिए, अधिकार की प्रकृति को चुनौती दी जाती है। और प्रोटेस्टेंट नए और अलग तरीकों से बाइबल को समझने लगे हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है। यह समस्याजनक हो जाता है। इससे एक आंदोलन पैदा होता है जिसे हम आम तौर पर शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद कहते हैं।

इसलिए शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद 18वीं सदी, 19वीं सदी में अपनी पहचान बनाता है, लेकिन फिर जब आप 20वीं सदी में प्रवेश करते हैं, तो शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद अपनी पहचान

बनाता है और प्रोटेस्टेंटवाद द्वारा हमेशा से रखे गए अधिकार की प्रकृति को चुनौती देता है। यही धर्मग्रंथ का अधिकार है और धर्मग्रंथ का मुख्य संदेश है। यही पवित्र आत्मा की सेवकाई के माध्यम से मसीह में ईश्वर है और इसी तरह।

धर्मग्रंथों का मुख्य मुक्ति संदेश। ठीक है, अब उदारवाद ने तीन प्रमुख प्रकार की संस्थाओं में अपना रास्ता खोज लिया है। एक बार जब प्रोटेस्टेंट उदारवाद की सोच इन तीन संस्थाओं में अपना रास्ता खोज लेती है, तो इसका अमेरिकी ईसाई धर्म पर एक शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है।

तो चलिए मैं तीन संस्थाओं का जिक्र करता हूँ। नंबर एक, प्रमुख प्रोटेस्टेंट सेमिनरी शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद से प्रभावित थी। तो प्रमुख प्रोटेस्टेंट सेमिनरी इससे प्रभावित थीं।

कुछ लोग टिके रहे, लेकिन उनमें से कई अमेरिकी प्रोटेस्टेंट उदारवाद और शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के आगे झुक गए। यह समस्याजनक हो जाता है क्योंकि अगर प्रमुख सेमिनरी बाइबल के अधिकार से अलग कुछ सिखा रहे हैं और वे प्रचारकों को पढ़ा रहे हैं, तो प्रचारक चर्चों में जाएँगे और वे वही सिखाएँगे जो उन्होंने सेमिनरी में सुना है। तो, ठीक है, तो यह हमें नंबर दो पर ले जाता है।

दूसरा कुछ प्रमुख पुलपिट हैं। चर्चों के कुछ प्रमुख पुलपिट ऐसे थे जिनमें शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवादी उपदेशक थे। इसलिए, अगर सेमिनरी के कुछ प्रमुख पुलपिट में ऐसा था, तो चर्च प्रोटेस्टेंट उदारवादी शिक्षा से प्रभावित होने वाले थे। यह नंबर दो है।

और तीसरा, बेशक, प्रमुख प्रकाशन। प्रमुख प्रकाशन, यदि वे शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद से प्रभावित हैं, तो वे शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद का संदेश प्रकाशित करेंगे। अब, एक विशेष प्रकाशन था जो सदी के अंत में शुरू हुआ था, और हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे।

लेकिन इसे कहा गया था, और शीर्षक पर ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है। इसे द क्रिश्चियन सेंचुरी कहा गया था। द क्रिश्चियन सेंचुरी। क्योंकि प्रकाशन शुरू करने वाले लोगों का मानना था कि 20वीं सदी ईसाई सदी होगी।

और इसलिए इसे प्रकाशित किया गया, इसका प्रकाशन प्रथम विश्व युद्ध से पहले शुरू हुआ, जाहिर है, लेकिन ईसाई सदी, बहुत आशावादी, बहुत तरह की प्रगतिशील, बहुत तरह की कल्पनाशील सोच के साथ 20वीं सदी कैसी होगी। इसलिए, यह एक तरह से समस्याग्रस्त हो जाता है। यदि सेमिनरी, पुलपिट और प्रकाशन सभी धर्मग्रंथों के अधिकार के प्रोटेस्टेंट धारणा को चुनौती दे रहे हैं, तो एक समस्या होने जा रही है।

एक तरह की लड़ाई होने वाली है, और हम इसे भी देखेंगे। तो, ठीक है। अब, इस आंदोलन की दो विशेषताएँ थीं जिन्हें शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद कहा जाता है।

तो, मैं एक सिक्के की दो विशेषताओं को चित्रित करना चाहता हूँ, और सिक्के के दो पहलू हैं। और आप सिक्के को आधे में विभाजित नहीं कर सकते, अन्यथा यह मूल्यहीन है। इसलिए, सिक्का केवल तभी मूल्यवान है जब आप दोनों पक्षों को एक साथ जोड़कर याद रखें।

तो, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद की दो विशेषताएँ हैं। ठीक है, पहली है परंपरा से मुक्ति। शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने खुद को परंपरा से मुक्त करने की कोशिश की।

इसने पाया कि चर्च की परंपरा बहुत दमनकारी थी। हमें चर्च की परंपरा से मुक्त होना होगा, और उन स्वतंत्रताओं में से एक अधिकार से स्वतंत्रता थी, विशेष रूप से अधिकार से। यदि आप देख रहे हैं, यदि अधिकार शास्त्र का अधिकार है, तो आपको उससे मुक्त होना होगा।

तो यह सिक्के का एक पहलू है: परंपरा से मुक्ति। सिक्के का दूसरा पहलू आधुनिक दुनिया के साथ समायोजन, आधुनिकता के साथ समायोजन, आधुनिक दुनिया के साथ समायोजन था। अब, आधुनिक दुनिया के साथ उस समायोजन का एक हिस्सा आधुनिक दुनिया के साथ बाइबिल के संदेश को समायोजित करना था ताकि बाइबिल का संदेश आधुनिक लोगों को आकर्षित कर सके।

तो, एक तरफ परंपरा से मुक्ति है, दूसरी तरफ आधुनिक दुनिया से समायोजन है, और यह एक ऐसा आंदोलन पैदा करने जा रहा है जिसे हम शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद कहते हैं। और यह समस्याग्रस्त होगा, मुझे कहना होगा। तो मैं बस एक और बात कहकर अपनी बात खत्म करना चाहता हूँ, और मुझे नहीं पता कि मैं समय निकाल पाऊँगा या नहीं।

मुझे नहीं लगता कि तीनों रणनीतियों में बहुत समय लगेगा, लेकिन मैं परिचय के तौर पर एक और बात कहना चाहता हूँ। शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद को पीछे धकेला जाएगा। शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद को काफ़ी मज़बूती मिलेगी, खास तौर पर सदी के अंत में, लेकिन शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद को पीछे धकेला जाएगा।

और यह प्रतिरोध, जो बहुत दिलचस्प है, दो स्रोतों से आने वाला है, या यह दो आंदोलनों से आने वाला है। और हम इस परिचय में उन दोनों आंदोलनों को ध्यान में रखना चाहते हैं, और फिर जब हम उनके सामने आएंगे, तो हम उनके बारे में भी खुद को याद दिलाएंगे। ठीक है, पहला आंदोलन जो इस पर पीछे हटने वाला है, वह कट्टरवाद नामक आंदोलन है।

यह मूल रूप से प्रोटेस्टेंटवाद तक ही सीमित है, लेकिन प्रोटेस्टेंट कट्टरवाद निश्चित रूप से इस तरह के शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के लिए एक धक्का होगा। हम अमेरिकी कट्टरवाद पर काफ़ी समय बिताते हैं क्योंकि अमेरिका में व्यापक ईसाई कहानी के संबंध में अमेरिकी कट्टरवाद को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। यह पहला धक्का है।

दूसरा प्रतिरोध नव-रूढ़िवाद नामक आंदोलन के रूप में होने जा रहा है। ऐतिहासिक और कालानुक्रमिक रूप से, नव-रूढ़िवाद कट्टरवाद के बाद आने वाला है, लेकिन नव-रूढ़िवाद एक ऐसा आंदोलन होने जा रहा है, जहाँ लोग बाइबल को बहुत गंभीरता से लेंगे, ठीक वैसे ही जैसे कट्टरवाद ने बाइबल को गंभीरता से लिया था। इसलिए, नव-रूढ़िवाद बाइबल को बहुत गंभीरता से लेगा, लेकिन वे बाइबल की व्याख्या मूल रूप से सुधारकों के नज़रिए से करेंगे।

तो, नव-रूढ़िवाद एक ऐसा आंदोलन होगा जो बाइबल को गंभीरता से लेता है लेकिन मुख्य रूप से जॉन कैल्विन की नज़र से बाइबल को पढ़ता है। तो, वे कुछ तरीकों से, सभी तरीकों से नहीं, लेकिन कुछ तरीकों से वे उस कैल्विनवादी परंपरा को अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में वापस लाने जा रहे हैं। इसलिए शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद बिना लोगों की प्रतिक्रिया के बेकाबू नहीं होने वाला है।

और ये जवाब अमेरिकी ईसाई धर्म में बहुत बड़ी प्रतिक्रियाएं होंगी, बहुत निर्णायक प्रतिक्रियाएं। तो, हम उन्हें दूसरे व्याख्यान में देखेंगे। अब, बस एक मिनट के लिए इसे देखें।

नंबर बी को देखें, और फिर जब हम फिर से लेक्चर के लिए एक साथ आएंगे तो हम यहीं से शुरू करेंगे। यह कब है? बुधवार से दो हफ्ते बाद। तो, इसे याद करने की कोशिश करें, आज से दो हफ्ते बाद। ठीक है, तो इस नंबर बी को देखें।

अब हम क्या करने जा रहे हैं, मैं इसे शुरू नहीं करूंगा, लेकिन अब हम जो करने जा रहे हैं वह यह है कि ईसाई धर्म को बचाने के लिए शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के पास तीन रणनीतियाँ हैं। शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद को यकीन था कि ईसाई धर्म संकट में है। और इसलिए, उनके पास तीन धार्मिक प्रकार की रणनीतियाँ हैं जिनके द्वारा वे अमेरिकी ईसाई धर्म को बचाने की कोशिश करने जा रहे हैं, बहुत ही दिलचस्प रणनीतियाँ जिनके बारे में हम वापस आने पर बात करेंगे।

ठीक है, भगवान आपका भला करे। खैर, हम यहीं रुकेंगे।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 17 है, शहरी विकास और चर्च।